बाजार का ये हाल है

(हास्य-व्यग्य-सग्रह)

श्री हिन्दी साहित्य संसार

बाज़ार का ये हाल है

शैल चतुर्वेदी

क्रम

●●●

भ्रष्टाचार

हमारे लाख मना करने पर भी
हमारे घर के चक्कर काटता हुआ
मिल गया भ्रष्टाचार
हमने डाटा नही मानोगे यार
तो बोला चलिए
आपने हमे यार तो कहा
अब आगे का काम
हम सभाल लेगे
आप हमको पाल लीजिए
आपके बाल-बच्चो को
हम पाल लेगे
हमने कहा भ्रष्टाचार जी !
किसी नेता या अफसर के
बच्चे का पालना
और बात है
इसान के बच्चे को पालना
आसान नही है
वो बोला जो वक्त के साथ नही चलता
इसान नही है
मैं आज का वक्त हूँ
कलयुग की धमनियो मे
बहता हुआ रक्त हूँ
कहने को काला हूँ
मगर मेरे कई रग हैं

दहेज, बेरोजगारी
हडताल और दगे
मेरे ही बीस सूत्री कार्यक्रम के अग है
मेरे ही इशारे पर
रात मे हुस्न नाचता है
और दिन मे
पडित रामायण वाचता है
मैं जिसके साथ हूँ
वह हर कानून तोड सकता है
अदालत की कुर्सी का चेहरा
चाहे जिस ओर मोड सकता है
उसके आगन म
अगडाई लेती है
गुलावी रात
और दरवाजे पर दस्तक देती ह
सुनहरी भोर
उसके हाथ मे चादी का जूता है
जिसके सिर पर पडता है
वही चिल्लाता है
वस मोर
वस मोर
वस मोर
इसीलिए कहता हूँ
कि मेरे साथ हो लो
और बहती गगा मे हाथ धो लो

हमने कहा गटर को गगा कह रहे हो ?
ये तो वक्त की बात है
जो भारत वर्ष मे रह रहे हो

वो बोला भारत और भ्रष्टाचार की राशि एक है
काश्मीर से कन्या कुमारी तक
हमारी ही देख-रेख है
राजनीति हमारी प्रेमिका

और पार्टी औलाद है
आजादी हमारी आया
और नेता हमारा दामाद है

हमने कहा ठीक कहते हो भ्रष्टाचार जी !
दामाद चुनाव मे खडा हो जाता है
और जीतने के बाद
उसकी अँगुली छोटी
और नाखून वडा हो जाता है
मगर याद रखना
दामादो का भविष्य काला है
वस, तूफान आने ही वाला है
वो वोला—तूफान आए चाहे आधी
अपना तो एक ही नारा है
भरो तिजोरी चादी की
जै वोलो महात्मा गाधी की

हमने कहा अपने नापाक मुँह से
गाधी का नाम तो मत ला

वो वोला इस जमाने मे
गाँधी का नाम
मेरे सिवाय कौन लेता है
गाधी के सिद्धानो पर चलने वाले को
जीने कौन देता है
मत भूलो
कि भ्रष्टाचार
इस जमाने की लाचारी है
हमे मालूम है
कि आप कवि है
और आपने
कविता की कौन सी लाइन
कहा से मारी है।

●

त्राहिमाम (महगाई उवाच)

ईमान जी को खोजते खोजते
जव हम उनके आश्रम पहुँचे
तो आश्रम की जगह
कोठी नजर आई
कॉल वेल दवाते ही
भीतर कोई चीखा—"आई"
तभी किसी ने दरवाजा खोला
और एक नारी-कठ बोला—
"किससे काम है भाई ?"
हमने पूछा—'ईमान जी है ।"
वो बोली—"उनको गुज़रे हुए तो
जमाना वीत गया
आजकल यहा बेईमानजी रहते है
मैं उनकी वीवी हूँ
मुझे महगाई कहते हैं ।"
हमने कहा—"लेकिन, नेम प्लेट पर तो
ईमान जी का नाम है ।"
वो वोली—' जी हा,
लोग ईमान का नाम पढकर
भीतर घुस आते है
और बेईमान का नाम रटते हुए
वापस लौट जाते है।
अरे, अभी तक वाहर खडे हैं आप
भीतर आइए

खाइए, पीजिए, मौज उडाइए
कौन-सी ह्विस्की पिलवाऊँ
देशी पसन्द न हो
तो विदेशी मँगवाऊँ
खाने मे क्या चलेगा
यहाँ तो वकरे से लेकर
आदमी तक का भेजा मिलेगा
डिस्को सुनवाऊँ
कल ही एक ज़ोरदार फिल्म आई है।
वो दिखलाऊँ
यहाँ सब इतजाम है
बेईमान की कोठी मे
आराम ही आराम है।
मेरी एक धर्म की बेटी है
जवान और खूबसूरत
नाम है रिश्वत
देखोगे तो नाचने लगोगे
आजकल चुनाव मे व्यस्त है
वरना आपको मिलवा देती
और आपकी सारी ईमानदारी
ताक पर रखवा देती।"
हमने कहा—"ईमान जी की भी
एक बेटी थी
गरीबी।"
वो बोली—"जी हाँ,
झोपडपट्टी मे रहती है
उसने हिन्दी के टीचर से शादी कर ली
रेशम-सी जवानी खादी कर ली
चौंतीस वरसो मे कपूतो के ढेर लगा दिए
अपना तो एक ही सपूत है
भ्रष्टाचार
सामने वाले वँगले मे रहता है

6 त्राहिमाम (महगाई उवाच)

जमाना उसे प्यार से शिष्टाचार कहता है
जिस दिन से पैदा हुआ है
वेईमान जो को मरने तक की फुर्सत नही
ऐसा कौन सा अक्लमद है
जिसे उनकी जरूरत नही।"
हमने कहा—"हमे भी उनसे मिलवाइए।"
वो वोली—"कैसे मिलवाऊँ
कोई एक ठिकाना हो तो वतलाऊँ
नेता का भाषण हो या सत का व्याख्यान
कवि का अभिनन्दन हो या लेखक का सम्मान
रूप का वाजार हो या जिस्म की दूकान
वाढ का चँदा हो या अकाल का दान
मुरादावाद का दँगा हो या खालिस्तान
सब जगह मौजूद है वलमा वेईमान
उन्ही की कृपा है जो
आसाम मे आग और गुजरात मे वलवा है
हिन्दी की हार और अग्रेजी का जलवा है
दो नवर का जोर है
चनाव का शोर है
गुँडा आजाद है
तस्कर आवाद है
खतरे मे रोटी है
जजर लँगोटी है
सूनी कलाई है।"
हमने कहा,—"कमरतोड महँगाई है।"
वो वोली, "न जाने कितने कवियो ने
मेरी महिमा गाई है
गाते-गाते गल गए
मैं दोपहर सी चढती रही
वो शाम से ढल गए।
याद रखना मैं महँगाई हूँ
जिस दिन से आई हूँ

हर ईमानदार के लिए
गरीबी का स्वेटर बुन रही हूँ
आदमियो की भीड मे से
शैतान चुन रही हू
और जब तक जिन्दा हू
सविधान की पोथी मे से
अपने अधिकार बीनती रहूँगी
आम आदमी के मुँह से रोटी
और उसकी औलाद के मुह से
दूध का कटोरा छीनती रहूँगी
मैं नौजवान पीढी के हाथ मे
अपराध कथाएँ सौपती रहूँगी
और सस्कृति के सीने मे
बलात्कार का खजर घोपती रहूँगी
ताकि वासना के कीडे
कलियो का जिस्म नोचते रहे
और कानून के दलाल
मामले को दबाने की सोचते रहे
मुझे हर हाल मे जीना है
खिलाफत का जहर तब तक पीना है
जब तक मेरा हर विरोधी
बेईमान नही होता
और मेरा काला बेटा
दिनमान नही होता।"
हमने हाथ जोडकर कहा, "त्राहिमाम्
त्राहिमाम् देवी त्राहिमाम्
आपकी महिमा को सौ सौ प्रणाम्
हमे भूल जाना
हम तो आपके यहाँ आ गए
आप हमारे यहा मत आना।

●

त्यौहार

त्यौहार आदमी को देश की सस्कृति से जोडता है।
और सस्कृति जोडती है आदमी को
रोशनी से,
मगर जिस देश की रोशनी,
गुलाम हो डूबते हुए सूरज की,
उस देश मे त्यौहार,
एक थोपी हुई मजबूरी है।
मेरे देश के मजबूर लोगो,
अपने जिस्म की खिडकिया खोलकर
बाहर झाको,
और देखो,
देश के एक कोने से,
दूसरे कोने तक,
भूख का चीखता हुआ सैलाब,
अकाल मौत मरता हुआ पलाश,
राशन की लाइन मे दम तोडता गुलाब,
आदमी के जिस्म क चप्पे चप्पे पर तैनात,
ईमानदारी के घाव,
चाँदी की कत्लगाहो मे,
आग के मसीहा का इतज़ार करती हुई,
आकाश मे तैरती,
ठडे लोगो की बर्फीली आँखें
मगर याद रखो,
मसीहा कभी आसमान से नही उतरता,

धरती के गर्भ से पैदा होता है,
धरती तुम्हारी है,
आग बन्द है तुम्हारी मुट्ठियो मे,
मुट्ठियाँ खोलो,
सुवह का सूरज तुम्हारे इन्तज़ार मे खडा है।
जीने के लिए आग
बहुत ज़रूरी है।
और मेरे देश मे त्यौहार
एक थोपी हुई मजबूरी है।

●

टूट गयी खटिया

हे वोटर महाराज,
आप नही आये आखिर अपनी हरकत से बाज

नोट हमारे दाब लिए और वोट नही डाला
दिखा नमदा घाट सौंप दी हाथो मे माला

डूब गए आसू मे मेरे छप्पर और छानी
ऊपर से तुम दिखलाते हो चुल्लू भर पानी

मिले न लड्डू लोकतंत्र के दाँव गया खाली
सूख गई किस्मत की बगिया रूठ गया माली

बाप-कमाई साफ हो गई हाफ हुई काया
लोकतंत्र के स्वप्न महल का खिसक गया पाया

चाट गयी मत्र चना चबना ये चुनाव चकिया
गद्दी छीनी प्रतिद्वद्वी ने चमचो ने तकिया

चाय पान और बोतलवाले करते है फेरे
बीस हजार, बीस खाता मे चढे नाम मेरे

झंडा गया भाड मे मेरा, हाय पडा महगा
बच्चा ने गड्डी सिलवा ली, बीबी ने लहगा

टूट गई रिश्तन की डोरी, डूब गई लुटिया
बिछने से पहले ही मेरी टूट गई खटिया

●

अपने आप से

राजनीति पर लिखी गई कविता
कविता नही समाचार है
सवेरे का समाचार
शाम को पुराना हो जाता है
मगर तुम
पाँच साल पुराने समाचार को
कविता की साडी पहनाकर
मच पर नचाते रहे
दगा शान्त हो गया
मगर शोर मचाते रहे

कविता को जहर दे कर
चुटकुलो को दूध पिलाते रहे
और दिल्ली की तुक,
बिल्ली से मिलाते रहे ।

शब्द की देवी का अपमान एक बार हुआ
तुम बार-बार करते रहे
कविता खत्म होने के बाद
तालियो का इन्तजार करते रहे ।

कविता, आदमी को आदमी से
प्यार करना सिखाती है
लेकिन तुम
प्यार के ढाई अक्षर बाटने की बजाय

घृणा के ढाई अक्षर बोते रहे
अपनी लगाई हुई आग को देखकर
मन ही मन खुश होते रहे।
कविता धरती के गर्भ से जन्म लेनेवाले
पौधे की कोमल डाली है
जो काटों के बीच गुलाब पैदा करती है
कविता, सूरज की वह पहली किरण है
जो अँधेरे के
हर सवाल का जवाब पैदा करती है।
कविता खेत से गाव लौटते हुए
बैलो की घंटी का स्वर है
जिसे सुन कर धनिया
आगन मे देहरी पर आ जाती है
और अपने होरी को सामने देखकर
सब कुछ पा जाती है।
कविता वह करुणा है
जो पत्थर जोडती मजूरन के श्रम को
छाला बना देती है
और छाले की पीर को निराला बना देती है।
कविता कुम्हार का
चलता हुआ वह चाक है
जो माटी को गागर कर देता है
कविता प्रसाद का आसू है
जो गागर को सागर कर देता है
कविता सौंदर्य का वह प्रकाश है
जो बेटी से बहू और बहू से
ममता मे बिखर जाता है
कविता पालने मे सोते हुए राम की छवि है
जिसे देख कर
कौशल्या का आंचल दूध से भर जाता है।
कविता
घुटनो दौडते हुए कृष्ण की किलकारी है

जिसे सुनकर यशोदा
मठा बिलोना भूल जाती है।
कविता दूर बजती कान्हा की बासुरी है
जिसे सुन कर राधा सोना भूल जाती है।
कविता बहरे तबील नही
तुलसी की चौपाई है
जिसने पूजा की अखड जोत जगायी है।
कविता सूर के भीतर का वह उजाला है
जो भावना को भक्ति देता है
सुर को साधना
और साधना को शक्ति देता है।
कविता दौडते हुए करघे की लय है
जो तार-तार को शब्द
और शब्द को तीर बना देती है
जुलाहे को कबीर बना देती है
कविता शबरी की तपस्या है
सुहागन की बिंदी है
कविता गुजराती है, मलयालम है, हिंदी है।

कविता मीरा की लगन
तुकाराम का भजन
और रवीद्र का गान है
कविता गीता है बाइबिल है, कुरआन है।

कविता वह कल्पना है
जो विचार को व्योम कर देती है
कविता वह दृष्टि है
जो सृष्टि को ओम् कर देती है।

कविता शाकुतलम् है
कविता मगलम् है
कविता सत्यम् है, शिवम् है, सुदरम् है।

और तुम

सुदरम् मे विरोधाभास ढूँढते रहे
शब्द की ताक्त पर नहीं
तालियो पर विश्वास करते रहे
ताली के लिए गाली गाना बद करो
भीतर के छल को छद करो
मन को मकरद करो
अपने आप को
आईने के सामने खडा करो
और दूसरो को पढने से पहले
खुद को पढा करो ।

●

वाप का बीस लाख फूक कर

लोकल ट्रेन से उतरते ही
हमने सिगरेट जलाने के लिए
एक साहव से माचिस मागी
तभी किसी भिखारी ने
हमारी तरफ हाथ वढाया
हमने कहा—
"भीख मागते शर्म नही आती ?"
वो वोला—
"माचिस मागते आपको आयी थी क्या ?"
वावूजी ! मागना देश का करेक्टर है
जो जितनी सफाई से मागे
उतना ही वडा ऐक्टर है
ये भिखारियो का देश है
लीजिये ! भिखारियो की लिस्ट पेश है
धधा मागने वाला भिखारी
चदा मागने वाला
दाद मागने वाला
औलाद मागने वाला
दहेज मागने वाला
दामाद मागने वाला
नोट मागने वाला
और तो और
वोट मागने वाला

हमने काम मागा
तो लोग कहते है चोर है
भीख मागी तो कहते है
कामचोर है
उनसे कुछ नही कहते
जो एक वोट के लिए
दर-दर नाक रगडते हैं
घिस जाने पर रबर की खरीद लाते है
और उपदेशो की पोथिया खोलकर
महत बन जाते है।
लोग तो एक बिल्ला से परेशान हे
यहा सैकडो बिल्ले
खरगोश की खाल मे
देश के हर कोने मे विराजमान है।
हम भिखारी ही सही
मगर राजनीति समझते है
रही अखबार पढने की बात
तो अच्छे अच्छे लोग
माग कर पढते हैं
समाचार तो समाचार
लोग बाग पडोसी से
अचार तक माग लाते है
रहा विचार।
तो वो बेचारा
महगाई के मरघट मे
मुर्दे की तरह दफन हो गया है।
समाजवाद का झडा
हमारे लिए कफन हो गया है
सत्य बहुत कडवा होता है
कभी झोपडियो मे झाककर देखिये
लोग किस तरह जी रहे हैं
कूडा खा रहे हैं

और बदबू पी रहे है
उनका फोटो खीचकर
फिल्म वाले लाखो कमाते है
झोपडी की बात करते है
मगर जुहू मे बगला बनवाते हे !"
हमने कहा, "फिल्म वालो से
तुम्हारा क्या झगडा है ?"
वो बोला—
"आपके सामने भिखारी नही
भूतपूर्व प्रोड्यूसर खडा है
बाप का बीस लाख फूक कर
हाथ मे कटोरा पकडा है !"
हमने पाच रुपये उसके
हाथ मे रखते हुए कहा—
"हम भी फिल्मो मे ट्राई कर रहे है भाई !"
वह बोला, "आपकी रक्षा करे दुर्गा माई
आपके लिए दुआ करूगा
लग गयी तो ठीक
वरना आपके पाच मे अपने पाच मिला कर
दस आपके हाथ पर धर दूंगा !"

●

कविफरोश

जी हा, हुजूर, मै कवि बेचता हू
मैं तरह तरह के कवि बेचता हू
मैं किसिम किसिम के कवि बेचता हू ।

जी, वेट देखिए, रेट बताऊ मैं
पैदा होने की डेट बताऊ मैं
जी, नाम बुरा, उपनाम बताऊ में
जी, चाहे तो बदनाम बताऊ में
जी, इसको पाया मैने दिल्ली मे
जी उसको पकडा त्रिचनापल्ली मे
जी, कलकत्ते मे इसको घेरा है
जी, वह बबइया अभी बछेरा है
जी, इसे फसाया मैंने पूने मै
जी, तनहाई मे, उसको सूने मे
ये विना कहे कविता सुनवाता है
जो, उसे सुनो, तो चाय पिलाता है
जो लोग रह गये धँधे मे कच्चे
जी, उन लोगो ने बेच दिये बच्चे
जी, हुए विचारे कुछ ऐसे भयभीत
जी, वेच दिये घबरा के अपने गीत ।
मैं सोच समझ कर कवि बेचता हूँ
जी हा, हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ ।

ये लाल किले का हीरो कहलाता

ये दाढी दिखला कर के बहलाता
जी, हास्य व्यग्य की वो गौरव गरिमा
जो गाया करता जीजा की महिमा
जी, वह कुतर्क का रग जमाता है
जी, बिना अर्थ के अर्थ कमाता है
वो गला फाड कर काम चला लेता
ये पैर पटक कर धाक जमा लेता
जी, ये त्यागी है, वैरागी है वो
जी, ये विद्रोही, अनुरागी है वो
ये कवि युद्ध की गाता है लोरी
वो लोक धुनो की करता है चोरी
ये सेनापति कवियो की सेना का
वो किस्सा गाता तोता-मैना का
ये अभी-अभी आया है लाइट मे
वो कसर नही रखता है डाइट मे
ये लिख लेता है कविता हथिनी पर
वो लिख लेता है अपनी पत्नी पर
जी, इसने बिल्ली, गधे नही छोडे
जी, उसने कुत्ते बधे नही छोडे
जी, सस्ते दामो इन्हे बेचता हूँ
जी हा, हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ।

जी, भीतर से स्पेशल बुलवाऊँ
आप कहे उनको भी दिखलाऊँ
ये अभी अभी लौटा है लदन से
वो अभी-अभी उतरा है चदन से
इसने कविता पर पुरस्कार जीता
है शासन तक लबा इसका फीता
जी, गम खाता वो आँसू पीता है
जी, ये फोकट की रम ही पीता है
इसके पुरखो ने पी इतनी हाला
बिन पिये रची है इसने मधुशाला

जी, ये मन मे कस्तूरी बोता है
जो, वो कवियो के बिस्तर ढोता है
ये देश प्रेम मे बहता रहता है
वो रात-रात भर दहता रहता है
ये मदिर जैसे गाँव किनारे का
वो तैरा करता सागर पारे का
जी, ये सूरज को कै करवाता है
अनव्याही वो किरण बताता है
इसकी कमीज पर धूप बटन टाँके
जी, उसका गदहा बैलो को हाँके
जी, क्यो हुजूर कुछ आप नही बोले
जी, क्यो हुजूर, है आप बडे भोले
जी, इसमे क्या है नाराजी की बात
मेरी दुकान मे कवियो की बारात
जी, नही जचे ये, कहे नये दे दू
जी, नही चाहिए नये, गये दे दू।
जी सभी तरह के कवि बेचता हूँ
जी हाँ हुजूर, में कवि बेचता हूँ।

जी, ये रूहे हिन्दी के बेटो की
जी, बेचारे किस्मत के हेठो की
जी इसने जीवन छन्दो मे बाधा
जी हा, गीतो को होठो पर साधा
जी वो कविता को सौंप गया त्यौहार
जी बेच दिया इसने अपना घर-बार
जी, वो मनु को श्रद्धा से मिला गया
जी, ये मित्रो को अद्धा पिला गया
जी, वो पीकर जो सोया, उठा नही
जी, इसे पेट भर दाना जुटा नही
जी, समझ गया हाँ कवयित्रियाँ भी हैं
जी, कुछ युवती, कुछ अब तक बच्ची हैं
ये वन मीरा मोहन को ढूढ रही

वो सूपणखा लक्ष्मण को मूड रही
ये बाँट रही जग को कोरे सपने
वो बेच रही जग को अनुभव अपने
जी, कुछ कवियो से इसका झगडा है
जी, उसका पौव्वा ज्यादा तगडा है
जी, ये चलती है पति को साथ लिये
जी, वो चलती पूरी बारात लिये
जी, नही नही हँसने की क्या है बात
जी, मेरा तो है काम यही दिन-रात
जी, रोज नये कवि हैं बनते जाते
जी, ग्राहक मरजी से चुनते जाते
जी, बहुत इकटठे हुए हटाता हूँ
जी, अतिम कवि देख, दिखलाता हूँ
जी ये कवि है सारे कवियो का बाप
जी, कवि बेचना वैसे बिल्कुल पाप।
क्या करूँ, हार कर कवि बेचता हूँ
जी हा, हुजूर, मैं कवि बेचता हूँ।

●

व्यंग्यकार से

हमने एक बेरोजगार मित्र को पकड़ा
और कहा "एक नया व्यंग्य लिखा है, सुनोगे ?"
तो बोला, "पहले खाना खिलाओ।"
खाना खिलाया तो बोला, "पान खिलाओ।"
पान खिलाया तो बोला, "खाना बहोत बढ़िया था
उसका मजा मिट्टी मे मत मिलाओ।
अपन खुद ही देश की छाती पर जीते जागते व्यंग्य हैं
हमे व्यंग्य मत सुनाओ
व्यंग्य उस नेता को सुनाओ
जो जन-सेवा के नाम पर ऐश करता रहा
और हमे बेरोजगारी का रोजगार देकर
कुर्सी को कैश करता रहा।
व्यंग्य उस अफसर को सुनाओ
जो हिन्दी के प्रचार की डफली बजाता रहा
और अपनी औलाद को अंग्रेजी का पाठ पढ़ाता रहा।
व्यंग्य उस सिपाही को सुनाओ
जो भ्रष्टाचार को अपना अधिकार मानता रहा
और झूठी गवाही को पुलिस का संस्कार मानता रहा।
व्यंग्य उस डाक्टर को सुनाओ
जो पचास रुपये फीस के लेकर
मलेरिया को टी० बी० बतलाता रहा
और नर्स को अपनी बीवी बतलाता रहा।
व्यंग्य उस फिल्मकार को सुनाओ

जो फिल्म मे से इल्म घटाता रहा
और सस्कृति के कपडे उतार कर सेंसर को पटाता रहा।
व्यग्य उस सास को सुनाओ
जिसने बेटी जैसी वहू को ज्वाला का उपहार दिया
और व्यग्य उस वासना के कीडे को सुनाओ
जिसने अपनी भूख मिटाने के लिए
नारी को वाजार दिया।
व्यग्य उस श्रोता को सुनाओ
जो गीत की हर पक्ति पर वोर-वोर करता रहा
और वकवास को वढावा देने के लिए
वस मोर करता रहा।
व्यग्य उस व्यग्यकार को सुनाओ
जो अर्थ को अनथ मे वदलने के लिए
वजनदार लिफाफे की माग करता रहा
और अपना उल्लू सीधा करने के लिए
व्यग्य को विकलाग करता रहा।
और जो व्यग्य स्वय ही अधा, लूला और लगडा हो
तीर नही वन सकता
आज का व्यग्यकार भले हो 'शैल चतुर्वेदी' हो जाये
"कवीर' नही वन सकता।"

●

नये खून के साथ जुडो

मेरे देश के टूटते हुए लोगो
आदमी का काम टूटना नही
जुडना है
ये माना कि चद आदमखोर
आदमी का नामोनिशान मिटाने पर तुले है
वे सारे देश को खून से तर देखना चाहते है
पसीने को नीलाम पर चढाना उनका चरित्र बन चुका है
शराब के चार पैग हलक मे उतार कर
वे सभ्यता के गालो पर जड रहे है चाटे
और अपनी जीत की खुशी मे
सस्कृति को मजबूर कर रहे हैं वेश्या की तरह नाचने के लिये
उनकी आखो मे रक्स करते हैं असहाय नगे जिस्म
और जहन मे कुलबुलाते हैं वासना के कीडे
तुम्हारी वहू बेटियो की इज्जत को वे
दफना देना चाहते हैं अपने रेशमी विस्तरो की सलवटो मे
रोटी के लिये बढे तुम्हारे हाथ पर
थूक देने की कमीनी हरकत को
वे अपना बडप्पन समझते हैं
शहर के बाहर गदे नाले के किनारे
कब्रनुमा झोपडी बनाकर रहने की इजाजत देकर
पेश करना चाहते हैं अपनी दरियादिली का सबूत
दो मुट्ठी अनाज की एवज
'नये खून' को कैद कर लेना चाहते हैं
अपनी तिजोरियो मे

'नये खून' के कैद होने का परिणाम जानते हो क्या है ?
आदमी की मौत !
आदमी को बचाना चाहते हो
तो बद करो हाथ फैलाना।
इकलाब भीख मे नही मिलता
इकलाब के लिए जरूरी है
ऊचे हाथ,
कसी मुट्ठिया
बढते हुए पाव,
इसलिए बढो
मेरे देश के लोगो
'नये खून' के साथ जुडो।

●

देश का क्या होगा भगवान

देश का क्या होगा भगवान
शहर शहर घुस आए जगल
गाव गाव वीरान। देश का

हाथ मे डिग्री, आख मे पानी
दुनिया मारे ताना
पढे लिखे इन बेकारो का कोई नही ठिकाना
यही हारकर बन जायेगे कल बखिया, मलखान। देश का

बेटी वधू बनी और द्वारे गज उठी शहनाई
क्या-क्या सपने लेकर
गोरी प्रीतम के घर आई
पर दहेज की बलिवेदी पर चढे सभी अरमान। देश का

गलियों मे और चौराहो पर
बटमारो का डेरा
एक अकेली राधा को दस बदमाशो ने घेरा
और सवेरे नदी किनारे पडी मिली बेजान। देश का

मिल मजदूर बना बेचारा
आज हुकुम का पत्ता
इधर जाए तो दत्ता मारे, उधर जाए तो सत्ता
ये हडताल न जाने कितनो की ले लेगी जान। देश का

कैसे ट्रेन से ट्रेन लड गइ
कोई समझ न पाया
मरे पाच सौ, समाचार मे केवल पाच दिखाया

तीरथ करने निकले, लेकिन पहुच गए शमशान। देश का...

कभी बाढ मे गाव बह गए
कभी पड गया सूखा
लुटने वाले से ज्यादा है बाटने वाला भूखा
आधा बाट के आधा खुद ही खा जाए श्रीमान। देश का

रिश्वत का बाजार तेज है
और ईमान का मदा
दफ्तर की हर कुर्सी मागे काम से पहले चदा
साहब से पहले बाबू, सबसे पहले दरबान। देश का

पाच सितारो वाले होटल के पर्दे हैं काले
गोरे तन से खेल रहे है
ये काले मन वाले
लेकिन किसमे इतना दम है जो कर दे चालान। देश का

जिसकी जेब है खाली
उसकी कौन करे सुनवाई
कौन चोर है कौन सिपाही सब मौसेरे भाई
पुलिस पुरोहित बन बैठी है और डाकू जजमान। देश का

बूढी होती जाए रोशनी
और जवान अधियारा
जाने किस आगन मे छिप गया सूरज का हत्यारा
हर देहरी खामोश पडी है, सूना हर दालान। देश का

छुरी फूल की गदन पर है
सिसक रही है क्यारी
हर पौधा सहमा सहमा अब आए किसकी बारी
लाल हो गया है लाहू से, ये सारा उद्यान। देश का

शब्द हो गए व्यापारी
और अर्थ हुए बेमानी
घायल है खरगोश गीत का, पूरी नही कहानी

सत्य कथाओ का मौसम है, कौन पढे गोदान । देश का

जब भी चली लेखनी कोई
लिख गई केवल पीडा
निगल गया है देश के चितन को चिता का कीडा
हर मुस्कान काफूर हो गई, हर चेहरा पाषाण । देश का

कटे हुए सदर्भो के
सब घटे हुए आयाम
कुरुक्षेत्र का गायक लिख गया हारे को हरिनाम
व्यर्थ हो गई है उपमाए, अर्थहीन उपमान । देश का

दूध के बदले पिला दिया
पानी मे घोल के आटा
बच्चा समझ गया झल्लाकर मा ने मारा चाटा
बोली—"मेरी कोख से जन्मा, ये कैसा शैतान ।" देश का

मचल गई मेले मे बिटिया
"लूंगी एक खिलौना'
मगर जेब मे हाथ जो डाला, बाप हो गया बौना
आख मे आसू भर कर बोला—'ले ले मेरी जान ।" देश का

अपने तट ही काट रही है
सविधान की धारा
प्रजातत्र फस गया भवर मे कैसे मिले किनारा
कब तक साथ निभा पायेंगे, कागज के जलयान । देश का

कुर्सी ही रामायण है
कुर्सी ही है गीता
राजनीति के जाल म फस गई आजादी की सीता
हाथ पे हाथ धर बैठे हैं अगद और हनुमान । देश का

नेता को अपनी चिंता है
जनता से क्या लेना
बार-बार ठोकर खाकर भी मतदाता समझे ना
जाने कब तक लूटेगा यू राजा को दीवान।
देश का क्या होगा भगवान।

●

मूल-मन्त्र

हमारे देश का प्रजातन्त्र
वह तन्त्र है
जिसमे हर बीमारी स्वतन्त्र है
दवा चलती रहे, बीमार चलता रहे—
यही मूल मन्त्र है।

फलवाले से कहा "ऊपर से देखने मे चिकना है
भगवान जाने रस कितना है।"
तो बोला "गीता मे भगवान कृष्ण ने कहा है
कर्म करो और फल मुझ पर छोड दो।
हम दोनो ने अपना-अपना कर्म किया
मैंने दिया और आपने लिया
अब फल अच्छा निकले या खराब
यह तो हरि-इच्छा है जनाब।"

डाक्टर से कहा "आख है तो जिन्दगी है
एक गई दूसरी बची है।"
तो बोला "लोग-बाग बिना बोर्ड पढे
चेम्बर मे घुस आते है
शर्म नही आती
नाक वाले डाक्टर को
आख दिखाते है।"

दर्जी से कहा "कुर्ता पेट पर टाइट सिला है।"
तो बोला "कपडा क्या आपको
प्रेजेण्ट मे मिला है
पानी मे डालते ही आधा रह गया

बडी-बडी आँखे

मदा उठती गिरती पल-पल तुम्हारी वडी वडी आँखें
मचाती हैं दिल मे हलचल तुम्हारी बडी-बडी आँखें

तीर प्रात से सध्या तक चलाती है प्रतिदिन कितने
करेंगी कब इसका टोटल तुम्हारी वडी-वडी आखे

कभी राखी जैसी बेकल, कभी श्रीदेवी सी चचल
कभी रेखा-सी पैरेलल तुम्हारी वडी बडी आँखें

अगर उठ जाय झटके से, शहर मे दगल करवा दे
झुके तो जगल मे मगल तुम्हारी वडी-वडी आँखे

कभी लखनौआ सी होती कभी हो जाती भोपाली
कभी बगाल, कभी केरल तुम्हारी बडी-वडी आखे

कभी कशमीर, कभी शिमला, कभी हो जाती मसूरी
कभी है दिल्ली का 'दल-दल' तुम्हारी वडी वडी आखें

कभी जासूसी नॉवेल तो कभी पुस्तक नव गीतो की
कभी अखबार कोई लोकल, तुम्हारी वडी वडी आखें

'शैल' को देख सामने क्यो हमेशा छुप-छुप जाती है
ओढ कर पलको का कम्बल तुम्हारी वडी-वडी आखे

●

मूल-मन्त्र

हमारे देश का प्रजातन्त्र
वह तन्त्र है
जिसमे हर बीमारी स्वतन्त्र है
दवा चलती रहे, बीमार चलता रहे—
यही मूल-मन्त्र है।

फलवाले से कहा "ऊपर से देखने मे चिकना है
भगवान जाने रस कितना है।"
तो बोला "गीता मे भगवान कृष्ण ने कहा है
कर्म करो और फल मुझ पर छोड दो।
हम दोनो ने अपना-अपना कर्म किया
मैंने दिया और आपने लिया
अब फल अच्छा निकले या खराब
यह तो हरि-इच्छा है जनाब।"

डाक्टर से कहा "आख है तो जिन्दगी है
एक गई दूसरी बची है।"
तो बोला "लोग-बाग बिना बोर्ड पढे
चेम्बर मे घुस आते है
शर्म नही आती
नाक वाले डाक्टर को
आख दिखाते हैं।"

दर्जी से कहा "कुर्ता पेट पर टाइट सिला है।"
तो बोला "कपडा क्या आपको
प्रेजेण्ट मे मिला है
पानी मे डालते ही आधा रह गया

बडी-बडी आँखे

सदा उठती गिरती पल-पल तुम्हारी वडी वडी आँखें
मचाती हैं दिल मे हलचल तुम्हारी बडी-वडी आखे

तीर प्रात से सध्या तक चलाती है प्रतिदिन कितने
करेंगी कब इसका टोटल तुम्हारी बडी-बडी आखें

कभी राखी जैसी बेकल, कभी श्रीदेवी सी चचल
कभी रेखा-सी पैरेलल तुम्हारी बडी-बडी आखे

अगर उठ जाये झटके से, शहर मे दगल करवा दें
झुके तो जगल मे मगल तुम्हारी बडी-वडी आँखें

कभी लखनौआ सी होती, कभी हो जाती भोपाली
कभी बगाल, कभी केरल तुम्हारी बडी-वडी आँखें

कभी कशमीर, कभी शिमला, कभी हो जाती मसूरी
कभी है दिल्ली का 'दल-दल' तुम्हारी वडी-वडी आखें

कभी जासूसी नॉवेल तो कभी पुस्तक नव गीतो की
कभी अखबार कोई लोकल, तुम्हारी वडी वडी आँखें

'शैल' को देख सामने क्यो हमेशा छुप छुप जाती है
ओढ कर पलको का कम्बल तुम्हारी वडी-बडी आखे

●

मूल-मन्त्र

हमारे देश का प्रजातन्त्र
वह तन्त्र है
जिसमे हर बीमारी स्वतन्त्र है
दवा चलती रहे, बीमार चलता रहे—
यही मूल-मन्त्र है।

फलवाले से कहा "ऊपर से देखने मे चिकना है
भगवान जाने रस कितना है।"
तो बोला "गीता मे भगवान कृष्ण ने कहा है
कर्म करो और फल मुझ पर छोड दो।
हम दोनो ने अपना अपना कर्म किया
मैंने दिया और आपने लिया
अब फल अच्छा निकले या खराब
यह तो हरि-इच्छा है जनाब।"

डाक्टर से कहा "आख है तो जिन्दगी है
एक गई दूसरी बची है।"
तो बोला "लोग-बाग बिना बोर्ड पढे
चेम्बर मे घुस आते है
शर्म नही आती
नाक वाले डाक्टर को
आख दिखाते है।"

दर्जी से कहा "कुर्ता पेट पर टाइट सिला है।"
तो बोला "कपडा क्या आपको
प्रेजेण्ट मे मिला है
पानी मे डालते ही आधा रह गया

अब जैसा बना है ले जाइए
कुर्ते को पेट के लायक नहीं
पेट को कुर्ते के लायक बनाइए।"
पान वाले से कहा 'एक रुपए का पान
कहा जाएगा हिन्दुस्तान?"
तो बोला "खा कर तो देखिए श्रीमान
आत्मा खिल जाएगी
हमार पान की पीक
शहर के हर कोने में मिल जाएगी।"
किताब वाले से पूछा 'प्रेमचन्द का गोदान है?"
तो बोला 'गोदान!
यह नाम तो पहली बार सुना है श्रीमान
हम तो साहित्य का सम्मान कर रहे हैं।
सत्य कथाएं बेच कर
राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण कर रहे हैं।"
कैलेण्डर वाले से पूछा "हरिवंश राय बच्चन का चित्र है?"
तो बोला "आपका टेस्ट भी विचित्र है
वर्तमान को
भूतकाल के कंधे पर टांग रहे हैं
बेटे के जमाने में
बाप का चित्र मांग रहे हैं।"
लेखक से कहा "यार, कुछ ऐसा लिखो
कि भीड़ से अलग दिखो।"
तो बोला 'जैसा बनता है लिख रहे हैं
यही क्या कम है
कि हमारे जासूसी उपन्यास
रामायण से ज्यादा बिक रहे हैं।"
दुकानदार से कहा 'यार ठीक से तौलो?"
तो बोला "तौलने के बारे में कुछ मत बोलो
जिन्दगी भर यही किया है
ग्राहक को तौल से ज्यादा दिया है
आप पहले हैं जो बोल रहे हैं

कि हम क्या तौल रहे है।"

करानी से कहा "एक तो वतन चुराती हो
ऊपर से आख दिखाती हो।"

तो बोली "दिखा तो आप रहे हैं
वतन मलवाओ, न मलवाओ।
चोरी का इल्जाम मत लगाओ
हमे पता है
कि आप कितने वडे है
आधे वर्तनो पर तो
पडोसियो के नाम पडे हैं।"

बेटे से कहा "वाल मत वढाओ ?"

तो बोला "पापाजी, आदर्श का पाठ मत पढाओ।
हम जमाने के साथ चल रहे हैं
आपके वाल नही है न
इसलिए आप जल रहे है।"

बीवी से कहा "पति हू, चपरासी नही।"

तो बोली "पत्नी हू, दासी नही
वाहर की भगवान जाने
घर मे मेरी चलेगी
चिराग ले कर ढूढने से भी
ऐसी वीवी नही मिलेगी।"

बेटी से कहा "इतनी रात को कहाँ ज रही हो ?"

तो बोली "टोको मत जाने दो
आपसे तो दामाद फँसा नही
मुझे ही फँसाने दो।"

पडोसी से कहा "आपका वेटा लडकियो को छेडता है।"

तो बोला "वेटे का नही उम्र का दोप है
जैसा भी है अच्छा है
किसी ऐसे वैसे का नही
हमारा वच्चा है।"

लडके वाले से कहा "बेटी पढी-लिखी और सुदर है।"
तो बोला "हमारा बेटा कौन-सा बदर है
रग थोडा पक्का है
फिर पढाई मे क्या रक्खा है
अच्छे-अच्छे लोग
डिगरियाँ लटकाये घूम रहे हैं
भाई साहब !
अपुन तो ऐसी लडकी ढूढ रहे है
जिसके बाप के पास पैसा हो
चेहरे का क्या है
चाहे जैसा हो।"

प्रोफसर से कहा 'जब देखो
कॉफी हाउस मे नजर आते हो
बच्चो को कब पढाते हो ?"
तो बोला "साल मे दो महीने इतवार के
तीन स्ट्राइक के
चार त्यौहार के
बच्चे अपने आप पास हो जाते, है
नकल मार के।"

सिपाही से कहा "कानून को भी मानते हो
या केवल डडा घुमाना जानते हो ?"
तो बोला "कानून की भाषा पढे लिखे बोलते हैं
हम तो हर कानून को
डडे से तौलते है
डडा हाथ मे है
तो हर गुडा साथ मे है।"

नेता से कहा "वोट लिया है
बदले मे क्या दिया है।"
तो बोला 'हम नेता हैं
आगे रहते हैं
पीछे क्या हो रहा है
कैसे देख सकते हैं

हमने माना कि देश का हाल बुरा है
मगर हमारे 'बापू' ने हमें सिखाया है
बुरा मत देखो
बुरा मत सुनो
बुरा मत बोलो।"

•

तलाश नये विषय की

मत पूछिए कि आजकल क्या कर रहे है ?
बस, पुरानी कविताओ मे
नया रग भर रहे है
लेकिन कितना ही भर लो
सब बेकार है
आज का श्रोता बडा समझदार है
फौरन ताड लेता है
अच्छे-अच्छे रग बाजो का
हुलिया बिगाड देता है ।

भगवान भला करे उन नेताओ का
जिनके भरोसे हमने
दस बरस निकाल लिए
और बाल बच्चे पाल लिए
किसी नेता की दाढी से
कविता की गाडी खीचते रहे
किसी के मरे हुए पानी से
शब्दो की फुलवारी सीचते रहे
किसी के चरित्र पर चोट करते रहे
धोती को फाडकर, लँगोट करते रहे
कब तक फाडते !
घिसे हुए नेता की आरती

कब तक उतारते ?
अब राजनीति मे क्या रक्खा है
क्योकि हर विरोधी
हक्का बक्का है ।
उधर मैदान खाली है
और इधर मच पर
कविता है न, ताली है ।
चली हुई कविता को
कितना और चलायें
समझ मे नही आता
नया विषय कहाँ से लायें ?

एक मित्र ने सलाह दी—
"गीतो की पैरोडी सुनाओ ।"
हमने जवाब दिया—
"पैरोडी पापुलर गीतो की बनाई जाती है
और हमे बताते हुए शर्म आती है
कि पिछले तीस बरसो मे
एक ही गीत पापुलर हुआ
(कारवा गुज़र गया गुबार देखते रहे)
और उसकी इतनी पैरोडियाँ बन चुकी हैं
कि आने वाली पीढियाँ
पता लगाते-लगाते खत्म हो जायेंगी
कि मूल गीत कौन-सा है ।"

वह बोला—"फिल्मी गीतो की पैरोडी कैसी रहेगी ?"
हमने कहा—"आजकल के फिल्मी गीत भी क्या हैं
(दे दे प्यार दे, प्यार दे, प्यार दे दे
दे दे प्यार दे)
ऐसे गीत की पैरोडी ऐसी लगेगी
जैसे कोई कैबरे डांसर
नाचते-नाचते कपडे उतार दे ।"

वह बोला— 'न्यूज पेपर पढो
देश मे हजारो दुर्घटनाये हो रही है
उन पर लिखो।"
हमने कहा—' समाचार !
कहाँ हडताल हुई, कहाँ दगा
कौन शहीद हुआ
कौन नगा
यही पता लगाते-लगाते
सुबह से शाम हो जाती है
और समाचार पुराना पडते ही
कविता बेराम हो जाती है।"

वह बोला— 'हमारे देश की
सदाबहार समस्या है—डाकू।"
हमने कहा— 'अगर किसी डाकू ने
मार दिया चाकू
तो बच्चे अनाथ हो जायेगे
भूख से परेशान होकर
डाकुओ के साथ हो जायेगे।"

वह बोला—' चोर।'
हमने कहा—चोरो को छेडना भी
खतरे से खाली नही है
क्योकि चोर इस जमाने मे
सम्मानित शब्द है
गाली नही है।"

वह बोला— आसाम।"
हमने कहा—"सलाह तो नेक है
लेकिन लिखने वाले सैंकडो है
और विषय एक है।
पता ही नही चलता

कि कौनसी कविता किसकी है !
नही भैया
आसाम वहुत रिस्की है।"

वह वोला—"खालिस्तान !",
हमने कहा—"कविता का नही
कृपाण का मामला है
खत्म हो जाए इसी मे भला है।"

वह वोला—'पुलिस !"
हमने कहा—"पुलिस का सम्बन्ध चोरो से है
हम कवि है
अपनी छवि नही बिगाडेंगे
कूडे को कलम से नही बुहारेंगे।"

वह वोला—"भ्रष्टाचार !"
हमने कहा—"एक ऐसा झाड
जिसकी डालियाँ नीचे
और जड ऊपर है
उसे किसका डर है ?"
वह वोला—"चुटकुले कवि सम्मेलनो को नाव हो गए हैं।"
हमने कहा—"वे भी आजकल
बहुत चालाक हो गए हैं।
एक लावारिस चुटकुले को हमने
पाल पोस कर वडा किया
मगर ऐन वक्त पर ऐंठ गया
हमे अंगूठा दिखाकर
दूसरे की गोद मे वैठ गया।
हमने पूछा तो वोला
'माफ करना अक्ल जी
यहाँ मेरे कई भाई वन्द हैं
आपके यहाँ अकेला फँस गया था।'

तालियों तक के लिए तरस गया था
और चुटकुला बिना ताली के
ठीक उसी तरह है
जैसे जीजा बिना साली के
और गुंडा बिना गाली के।"

वह बोला—"फिर तो एक ही विषय बचा है
बीवी !'
हमने कहा—"बीवी का मजाक उड़ायेंगे
तो बच्चा के संस्कार बिगड़ जायेंगे।'

वह बोला—"संस्कार की चिन्ता करोगे
तो धंधा कैसे करोगे
ऊपर उठने की कोशिश की
तो नीचे गिरोगे
जैसे भी बने
लोगों को हँसाओ
दाल रोटी खाओ
प्रभु के गुण गाओ।'

●

हमारे ऐसे भाग्य कहा

एक दिन अकस्मात्
एक पुराने मित्र से हो गई मुलाकात
हमने कहा—"नमस्कार।"
वे बोले—"गजव हो गया यार!
क्या खाते हो
जव भी मिलते हो
पहले से डवल नजर आते हो?"
हमने कहा—"छोडो भी यार
यह बताओ, तुम कैसे हो?"
वे बोले—"गृहस्थी का बोझ ढो रहे हैं
जीवन की बगिया मे आंसू बो रहे हैं
कर्म के धागो से
फटा भाग्य सी रहे हैं
बिना चीनी की चाय पी रहे हैं!"
हमने पूछा—"डायबिटीज है क्या?"
वे बोले—"हमारे ऐसे भाग्य कहाँ!
डायबिटीज जैसे राजरोग
बडे-बडे लोगो को होते हैं
हम जैसे कगालो को तो
केवल बच्चे होते हैं
तुम्हारे कितने हैं?"
हमने कहा—"हमे तो डायबिटीज है
तुम क्या जानो

कितनी बुरी चीज है !"
वे बोले—"बुरी चीज है तो मुझे दे दो
और बच्चे मुझसे ले लो।"
हमने पूछा— 'कितने हैं ?"
वे बोले—' जितने चाहो उतने हैं
सात कन्याएँ हैं
चार गूंगी, दो बहरी
और एक कानी है
ईश्वर की मिहरबानी है।"
हमने पूछा— 'भाभी की हैल्थ कैसी ?"
वे बोले —' हैल्थ ही हैल्थ है
वल्थ के लिए तो हम
बरसों से झटके खा रहे हैं।
आम की उम्मीद लिए
बबूल में लटके जा रहे हैं
सात कन्याएं न होतीं
तो आपकी तरह खाते-पीते
मौज उड़ाते।
एक दिन डायबिटीज के पेशंट बन जाते
कम से कम कहने को तो होता
कि हमारा भी फमिली डॉक्टर है
स्टील की तिजोरी है
दो मंजिला घर है
लक्ष्मी को उंगली पर नचाते
और लोगों की आँखों में धूल झोंककर
इन्कमटैक्स चुराते।
मगर यहाँ तो इन्कम ही नहीं है
तो टैक्स क्या चुरायेंगे
चुराने के नाम पर
उधारी वालों से आँखें चुरायेंगे।
मगर अब उधार देने वाले भी
इतने कसाई हो गए हैं

कि हम उनकी नजरो मे
बकरे के भाई हो गए हैं।
सरकार भी क्या करे
किस-किस को पकडे
जिसे देखो वही कुछ न कुछ खा रहा है—
व्यापारी सामान खा रहा है
ठेकेदार पुल और मकान खा रहा है
धर्मात्मा दान खा रहा है
बेइमान ईमान खा रहा है
और जिसे कुछ नही मिला
वो आपके कान खा रहा है"
हमने कहा—'यार खूब बोलते हो।"
वे बोले—"यही बोल रहा हू
घर पर तो लडकियो की मा बोलती है
सिंहनी की तरह छाती पर डोलती है
अपनी किस्मत मे तो
फनफनाती हुई बीवी
और दनदनाती हुई औलाद है
सच पूछो तो
यही पूजीवाद और समाजवाद के बीच
फसा हुआ बकरावाद है।"
हमने पूछा—"बकरावाद ?"
वे बोले—'हाँ हाँ बकरावाद!
कभी शेर की तरह दहाडते हुए
बारात लेकर गए थे
अब बकरे की तरह मिमिया रहे है
फर्क इतना है
कि बकरा एक झटके मे हलाल होता है
और हम धीरे-धीरे हुए जा रहे हैं।"

●

देश जेत्र मे

एक मित्र कहने लगे—
"जहाँ तक नजर जाती है
एक सैंतीस बरस का
अपग बच्चा नजर आता है
जो अपने लुंज हाथों को
उठाने की कोशिश करता हुआ
चीख रहा है—
'मुझे दल-दल से निकालो
मैं प्रजातन्त्र हूँ
मुझे बचा लो।
मैं तुम्हारा ईमान हू
गांधी की तपस्या हू
भारत की पहचान हूँ।'

"काम वाले हाथो मे
झडा थमा देने वाले
वक्त के सौदागर
बडे ऊचे खिलाडी हैं
जो अपना भूगोल ढांकने के लिए
राजनीति लपेट लेते हैं
और रहा कॉमर्स, तो उसे
उनके भाई-भतीजे
और दामाद समेट लेते है।"

हमने कहा—
"नेताओ के अलावा
आपके पास कोई विषय नही है ?"
वे बोले—"क्यो नही
बूढा बाप है
बीमार मा है
उदास बीवी है
भूखे बच्चे है
जवान बहिन है
बेकार भाई है
भ्रष्टाचार है
महगाई है
बीस का खर्चा है
दस की कमाई है
इधर कुआ है
उधर खाई है।"

हमने पूछा—"क्या उम्र है आपकी ?"
वे बोले—"तीस की उम्र मे
साठ के नजर आ रहे है
बस यूं समझिए
कि अपनी ही उम्र खा रहे है
हिन्दुस्तान मे पैदा हुए थे
कब्रिस्तान मे जी रहे है
जबसे मां का दूध छोडा है
आंसू पी रहे हैं।"

हमने कहा—"भगवान जाने
देश की जनता का क्या होगा ?"
वे बोले—"जनता दर्द का खजाना है
आंसुओ का समदर है
जो भी उसे लूट ले

वही मुकद्दर का सिकंदर है।"

हमने पूछा— 'देश का क्या होगा ?"
वे बोले— देश बरसों से चल रहा है
मगर जहाँ का तहाँ है
कल आपको ढूँढना पड़ेगा
कि देश कहाँ है
कोई कहेगा—ढूंढते रहिए
देश तो हमारी जेब में पड़ा है
देश क्या हमारी जेब से बड़ा है।"

●

मूल अधिकार ?

क्या कहा—चुनाव आ रहा है
तो खडे हो जाइए
देश थोडा बहुत बचा है
उसे आप खाइए।
देखिए न,
लोग किस तरह खा रहे हैं
सडकें, पुल और फैक्ट्रियो तक पचा रहे हैं
जब भी डकार लेते हैं
चुनाव हो जाता है
और बेचारा आदमी
नेताओ की भीड मे खो जाता है।
सविधान की धाराओ को
स्वार्थ के गटर मे
मिलाने का
हर प्रयास जारी है
खुशबू के तस्करो पर
चमन की जिम्मेदारी है।
सबको अपनी-अपनी पडी है
हर काली तस्वीर
सुनहरे फ्रेम मे जडी है।
सारे काम अपने आप हो रहे हैं
जिसकी अटी मे गवाह हैं
उसके सारे खून
माफ हो रहे हैं

इंसानियत मर रही है
और राजनीति
सभ्यता के सफेद कैनवास पर
आदमी के खून से
हस्ताक्षर कर रही है।
मूल अधिकार ?
बस वोट देना है
सो दिए जाओ
और गंगाजल के देश में
जहर पिए जाओ।

●

दफ्तरीय कवितायें

बडा बाबू ?
पट जाये तो ठीक
वर्ना बेकाबू ।

बडे बाबू का
छोटे बाबू से
इस बात को लेकर
हो गया झगडा
कि छोटे ने
बडे की अपेक्षा
साहब को
ज्यादा मक्खन क्यो रगडा ।

इन्स्पेक्शन के समय
मुफ्त की मुर्गी ने
दिखाया वो कमाल
कि मुर्गी के साथ-साथ
बडे साहब भी हो गए हलाल ।

करेक्टर रोल लिखने के लिए
बडे साहब को देकर
अपना कीमती पैन
जब छोटे साहब ने
वापस माँगा
तो बडे साहब ने

जेब में पैन ठूसते हुए कहा—
'तुम इतना भी नहीं समझता मैन।"

रिटायर होने के बाद
जब उन्होंने
अपनी ईमानदारी की कमाई
का हिसाब जोड़ा
तो बैलेंस में निकला
कैंसर का फोड़ा।

●

महिला वर्ष

महिला वर्ष के दौरान
रात के बारह बजे, जुए के मंदिर में
पकड़कर पति के कान
पत्नी बोली—"वाह श्रीमान् !
घर में चूहे डंड पेल रहे हैं
और आप यहाँ बैठे-बैठे
जुआ खेल रहे हैं !
यही हाल रहा तो एक दिन
जान पर खेल जाओगे
घर द्वार दाँव पर लगाकर
जेल जाओगे।"
पति व्हाइट हॉर्स पर सवार था
उतरते हुए बोला—
"तुमने भी उपदेश देने का
कौन सा मुहूर्त चुना है
अरे, धर्मराज युधिष्ठिर का नाम सुना है।
जुए में राज पाट
दाँव पर लगाकर
वन सिधार गए थे
अपनी पत्नी
द्रौपदी तक को हार गए थे।"
पत्नी ने कहा—"मैं द्रौपदी नहीं हूँ

जो चुपचाप दाँव पर लग जाऊँगी
तुम जैसे धर्मराज को
तलाक देकर
किसी दुर्योधन के साथ भाग जाऊँगी।"

●

लेन-देन

एक महानुभाव हमारे घर आए
उनका हाल पूछा
तो आँसू भर लाए,
बोले—
"रिश्वत लेते पकड गए हैं
बहोत मनाया, नही माने
भ्रष्टाचार समिति वाले
अकड गए हैं।
सच कहता हूँ
मैंने नही माँगी थी
देने वाला खद दे रहा था
और पकडने वाले समझे
मैं ले रहा था।
अब आप ही बताइए
घर आई लक्ष्मी को
कौन ठुकराता है
क्या लेन-देन भी
रिश्वत कहलाता है ?
मैंने भी उसका
एक काम किया था
एक सरकारी ठेका
उसके नाम किया था

उसका और हमारा लेन देन
बरसों से है
और यह भ्रष्टाचार समिति तो
परसों से है।"

●

रोजगार कार्यालय

बीस साल पहले
हमने कोशिश की
हमे भी मिले
कोई नौकरी अच्छी सी
इसी आशा मे दे दी
दरख्वास्त
एम्पलायमेंट एक्सचेंज मे
बीस साल की एज मे।
गुजर गए आठ साल
कोई जवाब नही आया
और एक दिन प्रात काल
एम्पलायमेट एक्सचेंज वालो का
पत्र आया
इ टरव्यू के लिए
गया था बलाया।

हम बन-ठन कर
राजकुमारो की तरह तनकर
पहुँचे रोजगार दफ्तर
बतलाया गया—
"जगह एक खाली है
सर्कस मे बदर की।"
भागते भूत की लगोटी भली
सोचकर 'हाँ' कर दी।

हमारी डाक्टरी जाँच की गई
फिर सात दिन तक
ट्रेनिंग दी गई
कूदने फाँदने की।
सात दिन बाद
'शो' में लाया गया
हंटर के इशारे से
ऊपर चढ़ाया गया
उचक-उचक कर
दिखा रहे थे कलाबाजियाँ।
दर्शक-गण मुग्ध बने
बजा रहे थे तालियाँ
तभी अकस्मात्
छूट गया हाथ
जा गिरे
कटघरे में शेर के
गिरते ही चिल्लाए—
"बचाओ, बचाओ।"
तभी शेर बोला—"शोर मत मचाओ
पेट का सवाल है
हमारे ऊपर भी
शेर की खाल है
हम भी हैं
तुम्हारी ही तरह सिखाए हुए
एम्पलायमेंट एक्सचेंज के लगाए हुए।"

कैसी दीवाली और कैसा त्यौहार

महगाई की सुरसा
सिर पर सवार
कैसी दीवाली और कैसा त्यौहार !

जलता है पेट और
आँखो मे पानी
नानी सुनाए, परी की कहानी
रोटी नही खाते
राजकुमार
कैसी दीवाली और कैसा त्यौहार !

छोटे से कधे पर
भारी सा वस्ता
कधा वदलते कटा सारा रस्ता
रस्ते पर दस वार
रखा उतार
कैसी दीवाली और कैसा त्यौहार !

मदिर की चोटी पर
बैठा है काग
सभ्यता की चूनर पर वहशत के दाग
सस्कृति की चादर
हुई तार-तार
कैसी दीवाली और कैसा त्यौहार।

टोपी है सस्ती
और महगा है जूता
थाम लिया हाथो मे, जिसका है बूता
जुम्मन से अलगू की
जूतम् पैजार
कैसी दीवाली और कैसा त्योहार !

बरसो से मेहमान
घर मे गरीबी
मजबूर मियाँ हैं बीमार बीवी
दवा नगद मिलती है
दर्द उधार
कैसी दीवाली और कैसा त्योहार !

गोरी है सूरत
पर, काला है धधा
बहरा है न्याय और कानून अधा
लगडी व्यवस्था है
गूगी पुकार
कैसी दीवाली और कैसा त्योहार!

रिश्वत नही, इसको
कहते हैं चदा
चदे के बल पर, टिका है बदा
बदो के बल पर
टिका दरबार
कैसी दीवाली और कैसा त्योहार !

वादे पर वादा है
उल्टा इरादा
सत्ता अगीठी है जनता बुरादा
सपने तो मीठे हैं

खट्टी डकार
कैसी दीवाली और कैसा त्योहार !

भक्तो के मुंह पर
लगाकर चूना,
भगवान क्यो छोड दिया
चुपके से पूना
उडकर जा पहुंचे
समदर के पार
कैसी दीवाली और कैसा त्योहार !

●

चल गई

वैसे तो मैं शरीफ इसान हूँ।
मगर अपनी बाईं आख से
बहुत परेशान हू
अपने आप चलती है
और लोग समझते हैं
चलाई गई है
जान बूझ कर मिलाई गई है।

एक बार बचपन मे
शायद सन् पचपन मे
क्लास मे
एक लडकी बैठी थी पास मे
नाम था सुरेखा
उसने हमें देखा
और आँख बाईं
'चल गई।'
लडकी हाय-हाय
क्लास छोडकर
बाहर निकल गई।
थोडी देर बाद
हमें है याद
प्रिंसिपल ने बुलाया
लबा-चौडा लेक्चर पिलाया
हमने कहा—"भूल हो गई।"

शर्म नही आती
आँख चलाते हो स्कूल मे।"
इससे पहले कि हकीकत बयान करते
फिर 'चल गई'
प्रिंसिपल को खल गई।

हुआ ये परिणाम
स्कूल से कट गया नाम
बमुश्किल तमाम
मिला एक काम।
तो इटरव्यू मे
खडे थे क्यू मे
एक लडकी
आगे खडी थी
अचानक मुडी
उसकी नजर हम पर पडी
और आंख
'चल गई?'
लडकी उछल गई।

दूसरे उम्मीदवार चौंके
लडकी का पक्ष लेकर भौंके
फिर क्या था
मार-मार जूते-चप्पल
फोड दिया हमारा वक्कल
सिर पर पाँव रखकर भागे
लोग बाग पीछे
हम आगे
घबराहट मे
घुस गए एक घर मे
भयकर पीडा थी सर मे
बुरी तरह हाँफ रहे थे

तभी पूछा उस घरवाली ने
"कौन ?"
हम खडे रहे मौन
वह बोली—' बतलाते हो या किसी को बुलाऊँ ?"
और इससे पहले
कि मैं जुबान हिलाऊँ
'चल गई'
वह मारे गुस्से के जल गई
साक्षात दुर्गा सी दीखी
बुरी तरह चीखी
बात की बात मे
हो गए इकट्ठे
अडोसी-पडोसी
मौसा-मौसी
भतीजे-मामा
मच गया हगामा
चड्डी बना दिया
हमारा पैजामा
बनियान बन गई
कुर्ता
मार मार कर बना दिया
हमारा भुर्ता।

हम चीखते रहे
और पीटने वाले
हमे पीटते रहे
भगवान जाने
कब तक निकालते रहे रोष
और जब हमें
आया होश
तो देखा
अस्पताल मे पड़े थे

डॉक्टर और नर्स
घरे खडे थे
नर्स बोली—"दर्द कहा है ?"
हम कहाँ कहाँ बतलाते
और इससे पहले
कि कुछ कह पाते
'चल गई।'
नर्स कुछ नही बोली
मगर डॉक्टर को खल गई
बोला—"इतने सीरियस हो
फिर भी ऐसी हरकत कर लेते हो
इस हाल मे
शर्म नही आती
मोहब्बत करते हो हस्पताल मे !"

डाक्टर और नर्स के जाते ही
आया वार्ड ब्वॉय
देने लगा अपनी राय—
"भाग जाए चुपचाप
नही जानते आप
बात बढ गई है
डॉक्टर को गड गई है
केस आपका बिगडवा देगा
और न हुआ तो
मरा हुआ बतलाकर
जिन्दा गडवा देगा।"

तब आँखें मूदकर
खिडकी से कूदकर
भाग आए
जान बची तो लाखो पाए।

एक दिन सकारे
बाप जी हमारे
बोले हमसे—
"अब, क्या कहे तुमसे
कुछ नही कर सकते
तो शादी ही कर लो
लडकी देख लो।
मैंने देख ली है
जरा हैल्थ की कच्ची है
जैसी भी है लडकी है
बडे घर की है
शादी कर लोगे
तो सभल जाओगे
खोटे सिक्के हो
मगर चल जाओगे।"

तब एक दिन
भगवान से मिलके
धडकता दिल ले
पहुच गए रडकी
देखने लडकी
शायद हमारी होने वाली सास
बैठी थी हमारे पास
बोली—"यात्रा मे तकलीफ तो नही हुई?"
और आख मुई
'चल गई'।
वे समधी कि मचल गई
बोली—"लडकी तो अदर है
मैं लडकी की मा हू
लडकी को बुलाऊ?"
और इससे पहले
कि मैं जुबान हिलाऊ

चल गई दुबारा
उन्होंने किसी का नाम ले पुकारा
और झटके से खडी हो गईं
हमारे बाप जी का, सारा प्लान ही धो गईं।

हम जैसे गए थे, लौट आए
घर पहुचे मुंह लटकाए
पिताजी बोले—
"अब क्या फायदा मुह लटकाने से
आग लगे ऐसी जवानी मे
डूब मरो चुल्लू भर पानी मे
नही डूब सकते, तो आख फोड लो
नही फोड सकते
तो हमसे नाता तोड लो
जब भी कही जाते हो पिटकर ही आते हो
भगवान जाने, कैसे चलाते हो !"

अब आप ही बताइए
क्या करूँ, कहाँ जाऊँ
कहाँ तक गुन गाऊँ
अपनी बाईं आँख के
कम्बख्त जूते खिलवाएगी
लाख दो लाख के
अब आप ही समालिए
म-म-म मेरा मतलब है, कोई रास्ता निकालिए
जवान हो या वृद्धा
पूरी हो या अद्धा
केवल एक लडकी
जिसकी एक आँख चलती हो
पता लगाइए, और मिल जाए
तो मुझे बताइए।

●

कर्मक्षेत्रे-युद्धक्षेत्रे

दुश्मन
हथियार माँग लाया, दान मे
आ गया मैदान मे
हाथ बढाकर दोस्ती का
छेड दी लडाई
अकारण ही भारत पर
कर दी चढाई
तब देश के बूढ़े और जवान
पजाबी, मरहठे, पठान
आ गए होश मे
तो हम भी
भनभनाने लगे जोश मे
सेना मे भरती होने का
हो आया चाव
आव देखा न ताव
और पत्नी के सामने
रख दिया प्रस्ताव
कहने लगी—' क्या बोलते हो
अपने को सैनिक से तोलते हो
अरे, बहादुरी ही दिखाना था
तो शादी क्यो की
मेरी बरबादी क्यो की
क्या घर मे लडते-लडते

जी नही भरा
जो इरादा है
बाहर लडने का
क्या फायदा
बी० ए० तक पढने का
लडाई मे वो जाते हैं
जिनका कोई नही होता
चले भी गए
तो उनके लिए कोई नहीं रोता
जिनको लडना है लडें
हमे नही लडना
अच्छा नही है
किसी के बीच मे पडना।"

मगर हमारा जोश
जोर मार रहा था
कत्तव्य पुकार रहा था
हम बोले—"क्या कहती हो
देश पर सकट है
कहाँ रहती हो
दुश्मन
बारूद उगल रहा है
हिमालय जल रहा है
देश पर बिजली कौंध रही है
हैवानियत
इसानियत को रौद रही है
शत्रु बात-बात पर
अडे जाता है
देश पर अपने चढे आता है
लगातार बढे जाता है
बावरी!
यहाँ तक आ पहुँचा तो क्या करोगी

फिर तो लडोगी
उसे वही रोकना अच्छा है
देखती नही
जाग गया देश का बच्चा बच्चा है।"
वे बोली—"जानती हूँ
मगर तुम बच्चे नही हो
तुम्हारे कधो पर जिम्मेदारी है
पीछ पाच बच्चे हैं
एक नारी है
घर मे लड लेते हो
तो क्या ये समझते हो
कि फौज म लडना आसान है
इसका भो कुछ भान है
मुह चलाने
और बदूक चलाने मे
अतर है जमीन असमान का
फिर कुछ तो ख्याल करो
आने वाले मेहमान का
दुश्मन पीछे लग गया
तो भागते बनेगा ?
बदूक चलाई है कभी
गोलियाँ दागते बनेगा ?
बदूक, बदूक है
गुलेल नही
लडाई, लडाई है
खेल नही।'

हमसे न रहा गया
कह दिया जो भी कहा गया —
'मेरे पौरुष पर नाज करती हो
मुझे क्या समझ रखा है
लोहे का बना हूँ

तुमने समझा, मुनक्का है
कि हर कोई चबा ले
आसानी से दबा ले
जानती हो
स्कूल मे एन०सी०सी० ली थी
और फायरिंग भी की थी
निशानेबाजी मे इनाम पाया था
पेपरो मे नाम आया था।"
वे बोली—"बस-बस रहने दो
देख ली तुम्हारी निशानेबाजी
सुई मे धागा डालने को कहा
तो डालना दूर रहा
सुई गुमा दी
उस दिन लकडी फाडने को कहा
तो कुल्हाडी
पैर पर दे मारी थी
और बैल्ट समझकर
खूटी से छडी उतारी थी
सी० सी० बीसी (एन० सी० सी० नही) को
गोली मारो
नहाओ, धोओ
और दफ्तर पधारो।"

इतना तगडा तर्क सुनकर
भला क्या बोलते
न जाने और क्या सुनना पडता
जो मुह खोलते
हमने सोचा—
(उलझना ठीक नही
पर स्वय को
कमजोर समझना भी ठीक नही)
भोजन किया

और चल दिए दफ्तर को
तभी रेस्ट हाऊस के सामने
फौजी लिवास मे
खडे देखा पडौसी अख्तर को
हमारा पौरुष जाग उठा
देश के प्रति अनुराग उठा
फौजी कप मे जा पहुचे
मगर माप तौल करने वाले
अफसर को नही जचे।
वोला—"कमर छयालीस है
और सीना वयालीस
वजन जरूरत से ज्यादा है
नौजवान नही दादा है।"
हमने हाथ जोडकर कहा—
'सिपाही जी,
यह फौजी भरती है
या मिस इडिया का चुनाव है
ले लीजिए न
मुझे वडा चाव है।"
वह वोला—"वहस मत करो जी
लडना
तुम्हारे वस की वात नही
हमे फौज ले जाना ह
वारात नही।"

उसने अफसर को दी रिपोर्ट
अफसर वहादुर था
हमको ही किया सपोर्ट
वोला—"सात दिन परेड करेगा
तो शेप मे आ जाएगा
फिर कुछ तो काम आएगा
हमे एक ओर

'शत्रु को पीछे हटाना है
और दूसरी ओर
देश की फालतू आबादी घटाना है
चल निकला तो वार करेगा
वर्ना दुश्मन की
दस पाँच गोलियाँ ही बेकार करेगा।"

दूसरे ही क्षण
हम फौजी शान मे थे
तीसरे दिन
लडाई के मैदान मे थे
गोलिया सनसना रही थी
दनदना रही थी
हवाई जहाज उतर रहे थे
चढ रहे थे
हम आगे बढ रहे थे
हुक्म मिला—"दागो!"
हम समझे—"भागो!"
तभी धमाका हुआ
शायद बम फूटा
हमारी नीद खुल गई
और स्वप्न टूटा।

●

शादी भी हुई तो कवि से

हमारे पडौसी लाला को
वडा घमड था
अपने अलीगढी तालो का
मगर छापा पडा
इन्कम टैक्स वालो का
तो दो घटे मे वाहर निकल आया
दवा हुआ माल
कई सालो का
हमारी श्रीमतीजी का
पारा चढ गया
वोली, "देखा
इन्कम टैक्स वाले ने
हमारे घर की तरफ
देखा तक नही
और आग वढ गया
जव से पडौसन के यहाँ
छापा पडा है
उसके आदमी का सीना
तन गया है
गिरी हुई मूछे तलवार हो गई हैं
रेडियो पहले की अपेक्षा
जोर से वजने लगा है
और लाला
हम लोगो को

भुक्खड समझने लगा है
कहता है—जिसके यहाँ
कुछ होगा ही नही
उसके यहाँ क्या पडेगा
हमारे यहाँ था
इसलिए पड गया
जिसके यहा कुछ नही था
उसके दरवाजे से आगे बढ गया।"

हमने कहा "लाला ठीक ही तो कहता है
हमारे पास है ही क्या
कविता है, कल्पना है
आँसू है, वेदना है
भावना है, छद है
चिता है अतर-द्वद्व है
और ऊपर से
महगाई के मारे ग्वा बद है
आई० टी० ओ० हमारे यहा आता
तो भला क्या पाता ?"

वे बोली "तुम तो कवि हो न
आँसू को मोती
और वेदना को हीरा समझते हो
काश !
इन्कमटैक्स वाले
हमारे यहा आते
तो तुम्हारे
हीरे और मोती तो पाते
नोटो की गड्डी न सही
लाख दो लाख
आसू ही ले जाते।"

हमने कहा "पगली !
किसी को हमारे आसुओ से
क्या लेना देना

अगर आँसू भी
लेन देन का माध्यम हो गया होता
तो हमारे पास वो भी नही होता
गरीब की आँखो की बजाय
तिजोरी मे बद हो गया होता।
तिजोरी !
जिसमे बद है
लहलहाते खेत की मुस्कान
थके हारे होरी का पसीना
मजबूर धनिया का यौवन
सावन का महीना
सिसकती पायल की झकार
भूखी और बेबस रधिया का प्यार
अनाथालय का चदा
और अपनी ही लाश ढोता हुआ
किसी गरीब बच्चे का कधा।"

वे बोली "चुप हो जाओ
लाला के रेडियो से
ऊँचा बज रहे हो
रेडियो बिजली से चलता है
उसका क्या बिगडता है
तुम तो ब्लड प्रेशर के मरीज हो
अभी पसर जाओगे
फिर तुम जहाँ चीख रहे हो
वह कविता का मच नही
तुम्हारे डेढ कमरे के शीश महल का
पलस्तर उखडा बरामदा है
ब्याह भी हुआ तो कवि से
भगवान जाने
किस्मत मे क्या बदा है
इन्कम टैक्स देने लायक भी नही।"

●

खतरा है चारो ओर खतरा

हम सबके पेटो मे आग
अधरो पर प्यास
लगे हुए दाँव पर
पिटे हुए मोहरे, कटे हुए ताश

पीछे दूर-दूर तक अधकार
सामने दर्द का एक पहाड
न कोई रास्ता, न कोई विकल्प
शीशमहल के आँगन मे कैद चाँदनी का झाड

आदमी एक कठपुतली मात्र
इस झूठ को दोहराओ बार-बार
सत्य बोलने के लिए नही होता
ये बीसवी सदी है यार

हम सबके पाँव पत्थर
सीने मे सर्द आह
हाथो मे फटे हुए नक्शे
न तो कोई मजिल, न कोई राह

टूटे हुए अरमान
सिर से पैर तक पाले हुए रोग
किसी गुमनाम मसीहा की तलाश
यूँ भी जीते हैं लोग

न तो हमारी कोई आत्मा
न कोई परमात्मा
कंधे पर क्रॉस ढोते ईसा की तरह
लम्हा-दर-लम्हा, खात्मा, खात्मा, बस खात्मा

सोओ मत, जागो
खतरा है चारो ओर खतरा
लपलपाती हुई एक लाल जीभ
पीना चाहती है
तुम्हारे खून का एक-एक कतरा।

●

तुक्कड तुकात । दीवाली दुखात

दीवालो के दिन
एक साधु वावा वोले,
"वच्चा ! तेरी रक्षा करेगा भोले,
आज दीवाली है
हमारा कमडल खाली है
भरवा दे
ज्यादा नही वस
पाच रुपये दिलवा दे।"

हमने कहा, "वावा जी !
दिलवाना होता तो पाच क्या
पाँच लाख दिलवा देते
सारा हिन्दुस्तान
आपके नाम करवा देते
हम भारतोय नौजवान है,
हमारे पास अधा भविष्य
लगडा वतमान और गूगे वयान है,
सरकार काम नही देतो
वाप पैसा नही दता
दुनिया इज्जत नही देती
महवूवा चिट्ठी नही देती।
लोग दोवाली के दिन
दोय जलाते हैं
हम दिल जला रहे हैं

इच्छाओ को आंसुओ मे तल कर
त्योहार मना रहे हैं
लोग हिंदुस्तान मे रह कर
लदन को मात करते हैं
हिंदी का झडा थाम कर
अंग्रेजी की बात करते हैं
और हमसे कहते हैं
अपनी सस्कृति को अपनाओ
अब हम आजाद हैं, त्योहार मनाओ।"
बाबा जी बोले,
"दुखी मत हो बच्चा
तू किस्मत वाला है
दीवाली के दिन
हमारे दर्शन कर रहा है
तुझे आशीर्वाद देने का
मन कर रहा है।"

हमने कहा, अपने मन को रोकिए
आशीर्वाददाताओ के पर छूते छूते
कमर झुक गयी है
जीवन की गाडी आगे बढने से रुक गयी है।"

वे बोले,
"तू हमारे आशीष का अपमान कर रहा है
हम त्रिकालदर्शी है
वेदाती हैं
देख ! हमारे मुह मे एक भी दांत नही
बच्चा, हसने की बात नही
लोग इस जमाने म कपडे पहन कर भी नगे है
हम एक लगोटी मे नगापन ढाक रहे हैं
सतो के देश मे धूल फाक रहे हैं
खाली कमडल हाथ मे ले कर
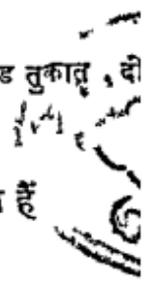
घर घर अलख जगाते है
और लोग हमे चोर समझ कर भगाते हैं
सूरदास को चैन नही मिला
तो नैन फोड लिये
हमे अन्न नही मिला तो दाँत तोड लिए
वे सूरदास
हम पोपलदास
वे अतीत के गौरव
हम वतमान के सत्रास।"
हमने कहा, "बावा जी,
आप तो साहित्यकारो को मात कर रहे है
साधु हो कर सत्रास की वात कर रहे है।"

वे बोले, "तू हमे नही पहचानता
आज से दस वरस पूव
हम अखिल भारतीय कवि थे
लोग हमारी वकवास को अनुप्रास
और अश्लीलता को अलकार कहते थे
बडे-बडे सयोजक हमारी अटी मे रहते थे
हमने शब्दो से अर्थ कमाया है
कविता को मच पर नगा नचाया है
उसी का फल चर रहे हैं
तन पर भभूत मल कर
खाली कमडल लिये फिर रहे है।"

हमने कहा, "दुखी मत होओ बावा
आपका कमडल खाली
हमारी जेव खाली
भाड मे जाये होली
और चूल्हे मे दीवाली।"

●

बाजार का ये हाल है

बाजार का ये हाल है
कि ग्राहक पीला
और दूकानदार लाल है
दूध वाला कहता है—
"दूध मे पानी क्यो है
गाय से पूछो।"

गाय कहेगी—"पानी पी रही हूँ
तो पानी दूगी
दूध वाला मेरे प्राण ले रहा है
मैं तुम्हारे लूगी।"

कोयले वाला कहता है—
"कोयले की दलाली मे
हाथ काले कर रहे है
बर्तन खाली ही सही
हमारी बदौलत चूल्हे तो जल रहे है।"
कपडे वाला कहता है—

"जिस भाव मे आया है
उस भाव म कैसे द
आपको हड्ड ड परसेंट आदमी बनाने का आपसे
आपसे फिफ्टो परसट भी नही लें।"

धोबी कहता है –

"राम ने धोबी के कहने से सीता को छोड दिया
आप कमीज नही छोड सकते।
सौ रुपल्ली की कमीज भट्टी खा गई
तो आप तिलमिला रहे हैं
इस देश मे लोग ईमान को भट्टी मे झोककर
सारे देश को खा रहे है।"

मक्खन वाला कहता है—
"बाबू जी ये मक्खन है
खाने के नही, लगाने के काम मे आता है
जो लगाना जानता है
ऊपर वाला उसी को मानता है।"

डॉक्टर कहता है—
"सोलह रुपये फीस सुनते ही
चेहरा उतर गया
जिस देश मे पानी पैसे से मिलता है
वहा लोगो को
दवा जैसी चीज फोकट मे चाहिए
आप जैसो के लिए सरकारी अस्पताल ही बेहतर है
जाइए, वही धक्के खाइए।"

अनाज वाला कहता है—
"आप खरीदते हैं, हम बेचते हैं
एक दूसरे को रोज देखते हैं
बडे बाप का बेटा
जो दिखाई नही देता
मगर ससार को तार रहा है
हम तो केवल डडी मारते हैं
वो डडा मार रहा है।"

घी वाला कहता है—
'घी खाने का शौक है

लो डालडा ले जाइए
हमारे देश के औद्योगिक विकास का नमूना है
खाएंगे
तो हाथी की तरह फूल जाएँगे
घी तो घी, रोटी खाना तक भूल जाएँगे।"

कैलेंडर वाला कहता है—
"लोग समाजवाद का सडकों पर ढूढ रहे हैं
और समाजवाद हमारी दूकान में बंद है
एक बंडल खोलिए, दर्शन हो जाएँगे
भक्त और भगवान, भिखारी और धनवान
यहाँ तक कि नेता और इंसान
सबको एक ही बंडल में पाएँगे।
हमारे यहाँ का कैलेंडर
योगालय से लेकर भोगालय तक में मिल जाएगा
किसी अभिनेत्री का प्राइव्हेट पोज देख लेंगे
तो कलेजा हिल जाएगा।"

बिजली वाला कहता है—
"क्या कहा बिजली गोल है
भाई साहब, हमारे डिपार्टमेंट का आधार ही पोल है।"

ट्रक वाला कहता है—
'हमारा भी कोई कैरियर है
हर चोम मील के बाद एक बेरियर है
कार साइड माँगती है, और सरकार
जाने दो बाबू, अपुन छोटे आदमी है
कोई सुन लेगा
तो चालान कर देगा।"

भिखारी कहता है—
"दाता ! पाँच पैसे में तो जहर भी नहीं आता

जो आपका नाम ले खा लें
और ऐसे समाजवाद से छुट्टी पा लें।"

चोर कहता है—
मुनाफाखोर मुनाफा खा रहे है
तो हम भी तिजोरियाँ तोड-तोड कर
अधिकार और कर्त्तव्य को एक साथ निभा रहे हैं
किसी भी तिजोरी मे झाँक कर देखिए
आत्मा हिल जाएगी
किसी न किसी कोने मे पडी
लोकतत्र की लाश मिल जाएगी
अदालत को हमारा काला चेहरा दिखाई देता है
वकील का काला कोट नही दिखता
बाबूजी ये हिंदुस्तान है, और यहाँ
फैसला गवाह लिखता है जज नही लिखता।"

पाकिटमार कहता है—
"लोग दस-दस साल का इनकमटक्स मारकर भी वफादार हैं
हमने दस पाच रुपये मार दिए
तो पाकिटमार हैं
उन्हे फौज की सलामी
हमे थानेदार का जूता
उनको बगला, हमको जेल
बाबूजी, इसी को कहते हैं
छछूदर के सर म चमेली का तेल।"

चश्मेवाला कहता है—
'ये लाल रग का चश्मा ले जाइए
हिन्दुस्तान भी आपको रूस दिखाई देगा
और ये रहा, सात रगो वाला चश्मा, मेड इन अमेरिका है
इमरजंसी हटने के बाद बुरी तरह बिका है
और ये रही स्पेशल क्वालिटी

लोकतत्र का अजीब करिश्मा है
कॉच का नही पत्थर का चश्मा है
एक बार खरीद लो तो पाँच साल तक काम मे आता है
हमारे देश का हर नेता इसीको लगाता है।"

विद्यार्थी कहता है—
"आप हमसे छ सवाल
तीन घटे मे करने को कहते हैं
गुरु जी ! ये वो देश है
जहाँ एक हस्ताक्षर करने मे चौबीस घटे लगते हैं।'

● ● ●